(२) ॐ अस्य श्री काली शतनामस्तोत्र मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः आद्या कालिका देवता
क्रीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। नमः कालिकांसर्वेष्ट भीष्ट सिद्धये सर्वत्र सदा जपे विनियोगः। ॐ सदाशिव-
ऋषये नमः-शिरसि। अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे। आद्या काली देवता नाम।
गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। नमः कालिकायै नमः सर्वांगे।

(३) ॐ देवि जगद्धन्ये स्तोत्र मेतदनुत्तमम्॥
शतनाम प्रवक्ष्यामि श्रृणुष्वैकमनाः शिवे॥ १॥
महाकाली महालक्ष्मी सरस्वती परात्परा।
कालरात्रिः कालिका च सर्वमंगल मंगला॥ २॥
सिद्धिदा सिद्धिदा सिद्धिः सिद्धेश गण वन्दिता।
भद्रकाली विल्वपत्र वासिनी विल्व भोजना॥ ३॥
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमज्ञान दानंदा दुर्गमार्थ स्वरूपिणी॥ ४॥
दुर्गमासुर संहन्त्री दुर्गमायुध धारिणी।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥ ५॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्लभा दुरतिक्रमा।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥ ६॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्लभा दुरतिक्रमा।
दुर्गमांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥ ७॥
दुर्गहन्त्री सुरेशानी दुरारि हृदयस्थिता।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ११॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ २९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ३९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ४९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ५९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ६९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ७९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ८९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९०॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९१॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९२॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९३॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९४॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९५॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९६॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९७॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९८॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ ९९॥
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा।
दुर्गमा दुर्गमाचारा दुर्गमांगी दुरासदा॥ १००॥

ह्रीं काली श्रीं कपाली च क्रीं कल्याणी फलावली ॥५॥
कमला कलिदर्पघ्नी कपर्दिनी कृपान्विता ॥
कालिका कालमाता च कालानल समद्युतिः ॥६॥
कपर्दिनी करालास्या करुणामृत सागरा ॥
कृपामयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा ॥७॥
कृशानुः कपिला कृष्णा कृष्णानन्द विवर्द्धिनी ॥
कालरात्रिः कामकला कामपात्रा विमोचिनी ॥ ८ ॥
कादम्बिनी कलाधारा कलिकल्मष नाशिनी ॥
कुमारी पूजन प्रीता कुमारी पूजकालया ॥९॥
कुमारी भोजनानन्दा कुमारी रूपधारिणी ॥

कदम्बवन सञ्चारा कदम्बवनवासिनी ॥१०॥
कदम्बपुष्पसन्तोषा कदम्बपुष्पमालिनी ॥
कृशोदरी कलकण्ठी च कलनादविनोदिनी ॥११॥
कादम्बरीपानरता कादम्बरीप्रिया ॥
कपालपात्रनिरता कङ्कालभाल्यधारिणी ॥१२॥
कमलासनसन्तुष्टा कमलासनवासिनी ॥
कमलालयमध्यस्था कमलामोदमोदिनी ॥१३॥
कलहंसगतिः कलैव्य नाशिनी कामरोषणी ॥
कामरूपकृतावासा कामपीठविलासिनी ॥१४॥
कमनीया कल्पलता कमनीय विभूषणा ॥

कमबोय गुजा राधा को मलाइने क होकरी ॥१५॥
कारणा मृत सन्तोषा कारणा नन्द सिद्धिदा ॥
कारणा नन्द जापेष्टा कारणार्चन हार्षिता ॥१६॥
कारणार्णव सम्भग्नो कारण व्रत पालिनी ॥
कस्तूरी सौरभा मोदा कस्तूरी तिलकोज्वला ॥१७॥
कस्तूरी पूजनेरता कस्तूरी पूजन प्रिया ॥
कस्तूरी वाहजननी कस्तूरी मृग लोचनी ॥१८॥
कस्तूरी भोजन प्रीता कर्पूरामोद मोदिता ॥
कर्पूर माला भरणा कर्पूर चन्दनोक्षिता ॥१९॥
कर्पूर कारणा हृष्टा कर्पूरा घृत पायेनी ॥

कर्पूर सागर स्नाता कर्पूर सागरालया ॥ २०॥
कूर्च बीज जपप्रीता कूर्च जाप परायणा ॥
कुलीना कौलिकाराध्या कौलिकाप्रिय कारिणी ॥ २१॥
कुलाचार कौतुकिनी कुलमार्ग प्रदर्शिनी ॥
काशी श्वरी कष्ट हर्त्री काशीश्वर वरप्रदा ॥ २२॥
काशीश्वर कृपा मोदा काशीश्वर मनोरमा ॥
कलभ जोर चरणा कृणरकाञ्ची विभूषणा ॥ २३॥
काञ्चनाद्रि कृतागारा काञ्चना चल कौमुदी ॥
काम बीज जपानन्दा काम बीज स्वरूपिणी ॥ २४॥

(२)

कुमीते धी कुलो कीर्ति नाशेनो कुलकामेनी॥
क्रों ह्रीं श्रीं मन्त्र वर्णेन कालक ष्टक घातिनी॥२५॥
इत्याद्याः कालिका देव्याः शत नामप्रकीर्तितम्॥
ककार वृट घटितैः कालिरूप स्वरूपकम्॥२६॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु कालिकां कृत मानसः॥
मन्त्र सिद्धिर्भवे द्वाशु स्तस्य कालीप्रसीदति॥२७॥
बुद्धिं विद्यां च लभते गुरोरादेश मात्रतः॥
धनवान् कीर्तिमान् भूया द्ज्ञानशीलो दयान्वितः॥२८॥
पुत्र पौत्र सुखैश्वर्यैर्मोदते साधको भुवि॥ (२)
भौमावास्या निशाभागे मंत्रज्ञ को समन्वितः॥२९॥

पूजयित्वा महाकाली माद्यां त्रिभुवनेश्वरीम्॥
पठित्वा तत्तन्नामाभि स्ततस्तत्फलभाग्भवेत्॥२७॥
नासाध्यं विद्यते तस्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन॥
विद्यार्थी वाक्पतिः सार्वज्ञने धनपतिर्भवेत्॥२८॥
समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्ये सुमेरुवत्॥
तिग्मांशुरिव दुष्प्रेक्ष्यः शशीव प्रियदर्शनः॥२९॥
रूपेमूर्तिधरः कामो योषितां हृदयङ्गमः॥
सर्वत्रजयमाप्नोति स्तवस्यास्य प्रसादतः॥३०॥
यं यं कामं पुरस्कृत्य स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥
तं तं कामं समाप्नोति श्रीमदाद्याः प्रसादतः॥३१॥

रणे राजकुले द्यूते विवादे प्राणसङ्कटे ॥
दस्यु ग्रस्ते ग्रामदाहे सिंह व्याघ्रावृते तथा ॥२५॥
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे ग्रह-राज भये ऽपि वा ॥
ज्वर वाहे। चिर व्याधौ महारोगादिसङ्कुले ॥२६॥
बालग्रहादि रोगे च तथा दुः स्वप्नदर्शने ॥
दुस्तरे संकिलेवापि पोते वात-विपद्गते ॥२७॥
वि। चिन्त्य परमा भामा मार्यां कालीं पराम्बराम् ॥
या। पठे च्छत नामानि दृढ भक्ति समन्वितः ॥२८॥
सर्वा पद्भ्यो विमुच्येत देवि। सत्यं मयोदितम्
नपापेभ्यो भयं तस्य नरोगेभ्यो भयं क्वचित् ॥२९॥

[illegible]

[illegible]

(ॐ पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं परिकल्पयामि [illegible] नमः॥
(ॐ [illegible])
ॐ आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि [illegible] नमः॥
(ॐ [illegible])
ॐ वायुतत्त्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि [illegible] नमः॥
(ॐ [illegible])
ॐ वह्नितत्त्वात्मकं दीपं परिकल्पयामि [illegible] नमः॥
(ॐ [illegible])
ॐ अमृततत्त्वात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि [illegible]
(ॐ [illegible])

सँ सर्वतत्त्वात्मकं मन्त्रः पुष्पाञ्जलिं तान्त्रिकं च पारं [illegible]
प्रयोगं श्रीविद्यायां च ॥ (उत्तमाङ्गनिष्ठे [illegible] पाद्याद्)
ॐ क्षमस्व ॥ रात्रि मन्त्रजपं [illegible] मोनेनैव [illegible]
समाहितचित्तः सन् स्वस्तोत्रं मानसं पठेत् ॥ पाठान्ते च
देवेशाय, उत्तराङ्गं न्यासादिकं [illegible] मन्त्रं [illegible]
उत्तरीयेण मानसोपचारैः [illegible] सर्वत्र ॥

॥ ॐ नमो जनन्यै ॥ मैरव उवाच ॥
महाकाल प्रवक्ष्यामि देव्या गद्यं तवाग्रतः ॥
यद्गुह्यं परमं पुण्यं सर्वतंत्रेषु गोपितं ॥ १ ॥
महादेवी महाभागा महादेवी महेश्वरी ॥
महाश्रद्धे महाचण्डी महाज्ञानी महाफला ॥ २ ॥

महा शुद्धा महा स्निग्धा महा निद्रा महोक्षणा ॥
महा मेधा महा लक्ष्मी महा भोगा महा दया ॥ ३ ॥
महा भीता महा पुष्टि महा पुष्टा महा जया ॥ २ ॥
महा क्षान्ति महा चौरा महा दंष्ट्रा महा द्युति ॥ ३ ॥
महा क्लान्ति महा पत्नी महा सिद्धा महा तपा ॥
महा स्वधा महा सीता महा बोधा महा सुधा ॥ ४ ॥
महा बन्धन रूपेन्द्री महा भय विनाशिनी ॥
महा नेत्रा महा वक्त्रा महा जिह्वा महा शुभा ॥ ५ ॥
महा महीरुहा वाणी महा योषा महा नरा ॥
महा क्लान्ति महा शान्ति महा भ्रान्ति महा मति ॥ ६ ॥
महा श्वासा महा सुप्ता महा पर्वत वासिनी ॥
महा ब्रह्ममयी माता महा कोथा महा रता ॥ ७ ॥

धृति

महारवरा भी महती पर्वती चण्डिका शेवा॥
महाक्रुद्धा महाजोद्ध्य महामाता महाचना॥६॥
महानीला महाश्वेता महाधाड्ढा महाबला॥
महाचित्ता महाचिन्ता महाहेतु र्विशारिवनी॥७॥
महाविद्या महाश्रद्धा महामेधा महास्मृतिः॥
महाऋद्धी महावृद्धी महाद्युतिः स्वप्ननाशिनी॥८॥
महामोहप्रहा मोक्षा महादृष्टा महायनी॥
महाध्रुवा महाकाणी महाशोकविनाशिनी॥९॥
महाधारा महाधीरा (महाघारा) महाभया चरेश्वरी॥
महाघोरा महारौद्री सम्या सर्वे प्रचायिनी॥१०॥
महाविषघ्नी विषहा महाक्रुद्धे प्रधारिनी॥

महाडुंगी महातत्वा महाकेवी दावासिनी ॥१४॥
महाशुन्धो शुभगा महेन्या च महारिती॥
महाप्रत्यांगिरा नित्या महाप्रेत-कपालिनी॥१५॥
महाशान्ति महाधृति र्महा महाबलकारिणी॥
यदर्द जीतिये कृत्या विघ्ननस्यो भवेद्यदि॥१६॥
लोहपञ्जर मध्यस्थ स्तस्य नश्यति बन्धनम्॥
राजानो दासतां यान्ति भवेत्सर्व जनप्रियः॥१७॥
अचलां श्रियं माप्नोति तस्य नश्यन्तु पक्षवः॥
संग्रामे विजये द्यूते गरुडोन्नर पन्नगान्॥१८॥
नावेषं क्रमते क्वेऽपि नमृत्युः पार्श्वके गते॥
नाकाले मरणं तस्य कदाचेत्संभविष्यति॥१९॥ (७)

मं वं कामयते तां मं तं प्राप्नोति निश्चयः॥
बहुना किमिहोक्तेन सर्वासिद्धिप्रदं नृणाम्॥२७॥

ॐ इतिरुद्रयामले भैरवदूत संवादे बटुक बातनाम
स्तोत्रं संपूर्णं शुभम्॥ ॐ

॥ॐ नमो जातवेदसे॥

ॐ अस्य श्रीबादेण क्षेत्रपाल अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रमन्त्रस्य
श्री भैरव ऋषिः॥ अनुष्टुप छन्दः॥ श्रीबादेण क्षेत्रपाल देवता॥
ह्रीं बीजम्॥ ह्रीं शक्तिः॥ स्वाहा कीलकम्॥
मम सर्वोपद्रव निवृत्तये श्रीबादेण क्षेत्रपाल प्रसाद सिद्ध्यर्थे
च बादेण क्षेत्रपाल अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र जपे विनियोगः॥
अथ ऋष्यादि न्यासः॥ ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे॥ बादेण क्षेत्रपाल देवतायै नमः हृदि॥
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥

ॐ स्वाहा कोलवाय नमः सर्वांङ्गे॥ अथाङ्गन्यासः॥ (ॐ नं. ग.)
ॐ आँ क्रौं हृदयाय नमः॥ ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ हूं। शिखायै वषट्॥
ॐ क्रैं कवचाय हुम्॥ ॐ क्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्॥ ॐ आं क्रीं क्रौं
क्रैं क्रौं क्रों। शक्ति अस्त्राय फट्॥ अथ कराङ्गन्यासः॥
ॐ आँ क्रौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ क्रौं। तर्जनीभ्यां नमः॥
ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः॥
ॐ क्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ आं। करतल करपृष्ठाभ्यां नमः॥
(ॐ क्रों हूं क्रीं दक्षिणे कालिकाया। प्राणा। इह प्राणाः।
ॐ क्रों क्रों क्रों क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिकायाः। एवं इह स्थितः॥
" " " " " " सर्वेन्द्रियाणि इहस्थितानि॥
" " " " " " वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राण
जिह्वा प्राण वाक् पाणी पाद पायूपस्थानीह आगत्य सुखं चिरं (६)
तिष्ठन्तु स्वाहा। इह लोके सुखं कुरुष्व मम सकलाभीष्ट सिद्धिं कुरु

॥ ततो ध्यानम् ॥

ॐ करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ॥ इत्यादि ॥

ततो मानसोपचारैः पूजयेत्। तद्यथा :-

ॐ पृथ्वीतत्त्वात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ब्रह्मयामले श्रीदक्षिणकालिकायै नमः ॥

(ऊर्ध्वमुखानिष्ठिवेत् पृष्ठ्यान्)

ॐ आकाशतत्त्वात्मकं पुष्पं परि० ब्रह्मयामले श्रीदक्षिणकालिकायै नमः ॥

(अधोमुखवामपृष्ठ्यङ्गुष्ठेनोत्तान्)

ॐ वायुतत्त्वात्मकं धूपं परि० ब्रह्मयामले श्रीं नमः ॥ (उत्तानदक्षपृष्ठ्यङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां)

ॐ वह्नितत्त्वात्मकं दीपं परि० ब्रह्मयामले श्रीं नमः ॥ (उत्तानवामपृष्ठ्यङ्गुष्ठाभ्यां)

ॐ अमृततत्त्वात्मकं नैवेद्यं परि० ब्रह्मयामले श्रीं नमः ॥ (उत्तानाग्रेद्वयङ्गुष्ठाभ्यां)

ॐ सर्वतत्त्वात्मकं ताम्बूलं परि० ब्रह्मयामले श्रीं नमः ॥ (उत्तानकनिष्ठाङ्गुष्ठाभ्यां)

ॐ क्षमस्व परमेशानि पूजाया स्तोत्रजापयोः । यन्न्यूनमधिकं देवि तत्सर्वं मम देवि क्षमस्व ॥ (पुष्पाञ्जलिं दद्यात्)

(उत्तानं पूर्ववत् ।)

ॐ ऐं ज्ञानदेव्यै नमः ॥

कपालिनी तेजरूपा लोकधात्री अरुन्धती ॥
सरस्वती विशालाक्षी ब्रह्मा विष्णेश्वरी रमा ॥१॥
मनोज्ञाङ्गी भवी माया दुष्टदैत्य विनाशिनी ॥
महामाया मदोन्मत्ता मदिरा मदिरेक्षणा ॥२॥
महामांसप्रिया श्यामा श्यामवक्त्रेन्दु सुखप्रदा ॥
विज्ञानन्दा चिदिलासा चित्स्वरूपा च चित्कला ॥३॥
राक्षसी डाकिनी चैव चण्डाली षडभराजिता ॥
लोलिनी कुलचक्रस्था कुमारी कालपञ्चमी ॥४॥
भगप्रिया भगाकारा मेरुण्डा भगमालिनी ॥
त्र्यक्षिणी प्रेतवाहा प्रीतिदा प्रेतमध्यगा ॥५॥
योगिनी तन्त्रकारी च महामारी वशासना ॥
घोरा ट्टहासिनी घोरा जयन्ती विन्ध्यवासिनी ॥६॥

जयदुर्गा भद्रकाली वा मुण्डा चण्डा वाराही ॥
त्रिगुणा शुद्धचैतन्या शान्ता कान्तार वासिनी ॥६॥
योगेश्वरी महादेवी वाग्गम्या निरञ्जना ॥
महाचण्डेश्वरी भीमा काला कालानलास्थिता ॥७॥
पशावती शिवाऽरण्या लज्जा हृद्या भयानका ॥
गान्धारी किन्नरी दुर्गा छिन्नाऽचल वासिनी ॥८॥
वाञ्छिनी डोंभिणी सेमा चौरि मण्डल मध्यगा ॥
क्षेमङ्करी क्षेत्रस्था पाराशी धरणी शिवा ॥९॥
महाप्रलय रङ्गस्था नर्तकी नटी नप्रेया ॥
विरूपा विश्वरूपा च सर्व बीज स्वरूपिणी ॥१०॥

निष्कलाऽनिष्क्रिया शान्ता निरवद्या निरम्बरा ॥
निर्लेपा निर्मलाऽनन्ता नित्यमुक्ता निराकृतिः ॥ १३ ॥
डाकिनीऽपि सुखी नित्यं योगिनी योगिनी भवेत् ॥
सर्वज्ञोऽपि लभते वाणी मस्तंगतां विचक्षणोम् ॥ १४ ॥
आचिराद्जायते सिद्धिः पादुकांजन्त्रवेचरी ॥
अष्टम्यां चार्द्धरात्रेतु पठेदष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥
तदा षड्कर्म सिद्धिर्जायते लोकसुन्दरी ॥
सभार्या व्यसने चैव संग्रामे सङ्कटे तथा ॥ १६ ॥
महाभये सङ्कटे च बद्धबन्धे रिपोर्मुखे ॥
पठेदस्तोत्रं हृदि ध्यात्वा पादुकां साधकोत्तमः ॥ १७ ॥
तं सर्वे साधकाः पापैः महादेव ववा मया ॥

ॐ शांतिः ॐ सर्वस्वरूपे देवि ॐ सर्वशक्तिस्वरूपे देवि सर्वं मां पाहि पाहि ॐ ॥

दक्षिण काली

अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीउन्मत्तभैरवाय नमः ॥

ॐ अस्य श्री श्यामाऽष्टोत्तरशत नाम स्तोत्र मन्त्रस्य भैरव ऋषिः ॥ अनुष्टुप छन्दः ॥ श्यामा देवता ॥ क्रीं बीजम् ॥ ह्रीं शक्तिः ॥ स्वाहा कीलकम् ॥ मम सर्वाऽभीष्ट सिद्धये श्री श्यामा प्रसाद सिद्ध्यर्थे च श्री श्यामाऽष्टोत्तरशत नाम पाठे जपे विनियोगः ॥

अथ ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ भैरव ऋषये नमः ॥ शिरसि ॥ अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे ॥ श्यामा देवतायै नमः हृदि ॥ क्रीं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ स्वाहा कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ विनियोगाय नमः ॥

ॐ आं क्रीं हृदयाय नमः ॥ ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ कवचाय हुम् ॥ ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ आं क्रीं क्रौं ह्रीं हूं क्रः अस्त्राय फट् ॥ एवं करन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥

ॐ आं क्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा ॥ ॐ क्रैं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ क्रौं अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ क्रं कनिष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

ॐ ओं ह्रीं श्रीं श्यामायाः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ ओं ओं ओं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्यामायाः जीव इह स्थितः॥ ॐ ओं ओं ओं ओं ह्रीं श्रीं श्यामायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि॥ ॐ ओं ओं ओं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्यामायाः वाङ् मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राण प्राणा आयुरस्यामेह गत्यैवागे वरं ओं ह्रीं, आयं, इहैवेह इत्यं अरेऽ नमस्कला भीष्ट सिद्धे अरेऽ स्वाहा॥

॥ न्यासोध्यानम्॥

[illegible]

सर्वत्र विजयस्तस्य नक्षत्रापि पराभवः॥
तस्य दर्शनमात्रेण पलायन्ते विपद्गणाः॥ ४०॥
सर्वज्ञा सर्वशास्त्राणां सभोज्या सर्वसम्पदाम्॥
सम्पत्तौ जायते धन्यैर्यां शालीनां प्रभुरेव च॥ ४१॥
वाणी तस्य वसेद्वक्त्रे कमला निश्चला गृहे॥
तन्नाम्ना मानवाः सर्वे प्रणमन्ति ससम्भ्रमाः॥ ४२॥
दृष्ट्वा तस्य दृणायन्ते त्र्यक्षिणोमाषष्ठ सिद्धयः॥
आद्या काली स्वरूपाख्यं शतनाम प्रकीर्तितम्॥ ४३
अष्टोत्तर शतं दृष्ट्वा पुरश्चर्यास्य गीयते॥
पुरश्चर्या विनैतेन सर्वं भीष्ट फलप्रदम्॥ ४४॥
शतनाम स्तुतिमिमां आद्या काली स्वरूपिणीम्॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि दृणुयाच्छ्रावयेदपि॥ ४५॥

सर्वपाप विनिर्मुक्तो ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥ ४

॥ इति श्रीः ॥

॥ श्रीजगन्मङ्गल कवच ॥

श्री भैरवउवाच ॥ काली पूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो ॥
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥ १ ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःख संकटात् ॥
सर्व दुःख प्रशमनं सर्व पाप प्रणाशनम् ॥ २ ॥
सर्वं संक्षिप्यते पुण्यं कवचं परमाद्भुतम् ॥
अतो वै श्रोतुमिच्छामि वद मे करुणानिधे ॥ ३ ॥
श्री भैरवउवाच ॥ रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ॥
श्रीजगन्मङ्गलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥ ४ ॥

पठित्वा धारयित्वा वै त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात्॥
नारायणोऽपि यज्ञित्वा नारो भूत्वा भवेत्स्वराट्॥ ५॥
योगेनं योभमनयत्र यज्ञित्वा चरेभुवः॥
परब्रह्मसंबंधानैव रावणादि नि वा नरान्॥ ६॥
यस्य प्रसादाद्धो गोऽपि त्रैलोक्यं विजयो भुवः॥
धनाध्यक्षः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूद्धरोपतेः॥ ७॥
एवं च सुकलाः देवाः सर्वसिद्धेश्वरः प्रिये!॥
ॐ ॐ ॐ बीजमन्त्रस्वरूपस्यास्य कवचस्य ब्रह्माणः शिवः॥ ८॥
छन्दोऽनुष्टुप्देवता च कालेक्षा कादोणेरिता॥
जगतां मोहने कृष्टे विजये भुक्तिमुक्तिषु॥
योगेश्वर्यजपे नैव पोनयोगः प्रयोगतः॥ ९॥

[जापो जामता तत्सार पोतयोग गुरु.

शिरो मे कालिका पातु क्रौं काली क्रौं परा॥
क्रौं क्रौं क्रौं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी॥१०॥
ह्रूँ ह्रूँ पातु नेत्रयुग्मं ह्रौं ह्रौं पातु श्रुतिद्वयम्॥
दक्षिणे कालिके पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी॥११॥
क्रौं क्रौं क्रौं रसना पातु ह्रूँ ह्रूँ पातु कपोलकम्॥
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥१२॥
ह्रां ह्रीं रात्यै हृदयं स्कन्धौ महाविद्यारवेलप्रदा॥
खड्ग मुण्डधरा कालो सर्वाङ्गं मे सदावतु॥१३॥
क्रौं ह्रूँ ह्रीं चामुण्डा पातु चामुण्डा हृदयं मम॥
मे ह्रीं ॐ ऐं स्तनद्वयं ह्रीं फट् स्वाहा कुक्षिस्थलम्॥१४॥

अष्टाक्षरी महाविद्या ऋणौ पातु सकर्तृका ॥
ॐ क्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रीं क्रीं पातु वक्त्रे षडक्षरी ॥५॥
ॐ नमो भगवति दक्षिणे कालिके ऽवतु ॥
ॐ स्वाहा पातु पृष्ठे च कालिका रा दशाक्षरी ॥६॥
ॐ नमो भूर्भुवः राद्यापातु कालिकायै नमस्ततः ॥
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥७॥
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके ह्रूं ह्रूं पातु कटिद्वयम् ॥
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहान्ता चोरदुग्मकम् ॥८॥
ॐ ह्रीं क्रीं ये स्वाहा पातु पादुभौ कालिका सदा ॥
काली हृन्नाम विद्येयं चतुर्वर्ग फलप्रदा ॥९॥

(७) ओं ईं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरो मम ॥
खड्ग मुण्ड धरा काली वर दाऽभय धारिणी ॥२०॥
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभिरक्षतु ॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥२१॥
विप्रचित्ता तथोग्रोग्र प्रभा दीप्ता घनत्विषा ॥
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माङ्गी ॥२२॥
एताः सर्वाः खड्ग धरा मुण्ड भाला विभूषणा ॥
रक्षन्तु मां दिग्विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा ॥२३॥
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥ (८)

(21) मां वैं देव्यो यथा तथा ॥

वाराही नार सिंही च सर्वाभीत भूषणा ॥ २३ ॥
रअन्त स्वायुधैं दिव्य मां पैं देव्यो यथा - तथा ॥
शैतं ते कायेत्तं दिव्यं कवचं प्रसादतम् ॥ २४ ॥
बीजगन्भङ्गलनाम महामन्त्रौ वं विग्रहम् ॥
त्रैलोक्या - कर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ॥ २५ ॥
गुरुपूजाविधायाथ विधिवा प्रपठेत्ततः ॥
कवचं त्रिः सकृत्कार्णे यावज्ज्ञानं च वा पुनः ॥ २६ ॥
एतच्छतार्धं मावृत्त्य त्रैलोक्य विजयी भवेत् ॥
त्रैलोक्ये सोभय त्येव कवचस्य प्रसादतः ॥ २७ ॥
महाकवि भवेन्मासात्सर्व सिद्धीश्वरो भवेत् ॥
पठन्वत्तीर कालेकायें कलेनैव पठेत्सकृत्तथ ॥ ३० ॥

शतवर्षसहस्राणां प्रजायाः फलमाप्नुयात् ॥
धर्मे वा वर्तते चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ॥ २०॥
शिरसायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारणाद्भवेत् ॥
त्रैलोक्यं मोहयेत्, तोयात्रैलोक्यं क्षुभयेत्तथा ॥ २१॥
सुखवान् धनवान् श्रीमान्, नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥
ब्रह्मस्त्रीयोनिसंभूतं धारणात्तस्य कीर्तनात् ॥ २२॥
नाशमायोनिसंभूतं सर्वत्र कवचस्यास्य कीर्तनात् ॥
मृतवत्सा च या नारी वन्ध्या वा मृतप्रजा ॥ २३॥
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यास्य धारणात् ॥
बहुपुत्रा जीववत्सा भवत्येव न संशयः ॥ २४॥

नदेयं पराशेष्ये भ्यो न्यभक्तेभ्यो विशेषतः॥
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्॥२५॥
ततो मूलेन्यसेत्कण्ठे वाग्देवीं मन्दिरे मुखे॥
पीत्वान्तं स्वैर्यमाख्याय नेयसायेव निश्चितम्॥२६॥
इदं कवचमज्ञात्वा योजपेद्दक्षिणालिकाम्॥
शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपि तस्य विद्या न सिध्यति॥२७॥
सङ्कल्पघातमाप्नोति सो ऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥
जपेदादौ जपेदन्ते सप्तवारं तनुक्रमात्॥२८॥
शोधयित्वा यत्नकृत्वाऽपि गोपनीयं प्रयत्नतः॥
लिखित्वा स्वर्णपात्रे वै पूजाकाले तु साधकः॥२९॥

सार्द्धं चार्यं प्रयत्नेन त्वेवारत्नं प्रपूजयेत्॥ इति रहस्यं॥

॥श्रीकाली हृदयम्॥ श्रीमहाकाल उवाच॥

महाकौलं इलसोत्र हृदयाख्यं च महोत्तमम्॥
शृणुष्वप्रिये! महागोप्यं दासेणाया सुगोपितम्॥१॥
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तवप्रीत्या प्रकाशितम्॥
अतेभ्य गुह्य गोप्यंच सत्यं वक्ष्यौतवे!॥२॥

॥पार्वत्युवाच॥

यास्मेन् मुखे सप्तरत्नं केन स्तोत्र कृतं पुरा॥
तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो महेश्वर दयामयं!॥२॥

॥श्रीमहाकाल उवाच॥

पुरा दक्षमखे शीघ्रं हरेणैवं कृतं महत्॥
ब्रह्म हत्या कृतैः पापैः भैरवत्वं समागतम्॥४॥

ॐ महाकाल ऋष्यादिन्यास:

ॐ महाकाल ऋष्यये नम: - शीरसि। उष्णिक् छन्दसे नम: मुखे। दक्षिणकालिकादेवतायै नम: हृदये। क्रीं बीजाय नम: गुह्ये। ह्रीं शक्तये नम: पादयो:। नम: कीलकाय नम: सर्वाङ्गे

अथ करन्यास:

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नम:।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:।
ॐ ह्रीं मध्यमाभ्यां नम:।
ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यां नम:।
ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नम:।
ॐ ह्रीं करतलकर पृष्ठाभ्यां नम:।

अथ हृदयादिन्यास:

ॐ ह्रीं हृदयाय नम:।
ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रीं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रीं कवचाय हुं।
ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रीं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्।

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्ण चन्द्रनिभाननाम्॥ १॥
नीलोत्पल दल प्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम्।
मुण्डं च दधतीं खड्गं वामे तं वरदं तथा॥ २॥

अथ ध्यानान्तरम्।

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम्॥ ३॥
सद्यश्छिन्नशिरः खड्ग वामाधोर्ध्वकराम्बुजाम्।
अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम्॥ ४॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम्।
कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्चिताम्॥ ५॥
कर्णावतंसतानीत शवयुग्मभयानकाम्।
घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्॥ ६॥
शवानां करसंघातकृतकाञ्चीं हसन्मुखीम्।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधारा विस्फुरिताननाम्॥ ७॥
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्।
बालसूर्यप्रतीकाशत्रिनेत्रां पिशिताशिनीम्॥ ८॥
पिबन्तीं रुधिरं पात्रं पूरितं मुखसीमनि।
सुरासुरैः सदा सेव्यां दुष्टदैत्यविनाशिनीम्॥ ९॥
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम्।
सुखप्रसन्नवदनां स्मेरानन सरोरुहाम्॥ १०॥
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वकामसमृद्धिदाम्॥ ११॥

अथ मानसपूजा।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।
ॐ सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रीतये समर्पयामि नमः।

विभाणा रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्॥
अट्टाट्टहास निरतां सर्वदा नग्न दिग्म्बराम्॥३॥
शवासन स्थितां देवीं मुण्डमाला विभूषिताम्॥
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत्॥४॥
ॐ कालिका घोररूपाधा सर्वकाम फलप्रदा॥
सर्व देवैः स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥५॥
ह्रीं हों स्वरूपेणी ज्येष्ठा त्रिपुटा केषु कुलेभ्य॥
तव स्नेहान्मयाख्यातं नदेयं यस्य कस्याचित्॥६॥
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके॥
यस्य विज्ञान मात्रेण जीवन्मुक्तो भवेन्नरः॥७॥

नागयज्ञोपवीतां च बद्धाङ्गेन तां शोभनाम्॥
जटाजूटं च साञ्चेत्य महाकाल समीपगाम्॥८॥
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः॥
प्राप्नुवन्ति च ते सौख्यं सर्वं सर्व वरानने॥९॥
यन्त्रं शृणु परं देव्या सर्वार्थ साधकम्॥
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्याद् गोप्यतरं महत्॥१०॥
त्रिकोणं पञ्चकं चाष्ट कमलं भूपुरान्वितम्॥
मुण्डपीठं च ज्वालां च आलिखेन्त्रं सुसिद्धिदम्॥११॥
मन्त्रं तु पूर्वमायेतं धारयस्व सदा प्रिये।
देव्या दक्षेणा काल्यास्तु नाम ज्वालां नि शामय॥१२॥

(11) कालीं दक्षिणकालीं च कृष्णरूपां परात्मिकां ॥ (12)
मुण्डमालां महालक्ष्मीं सृष्टिसंहारकारिकां ॥ १३ ॥
गुह्यातिगुह्यरूपां महामायां योगनिद्रां भगप्रियां ॥
भगलिंगैक्यसंप्रीतां भगोद्भवां भगाकृष्टां ॥ १४ ॥
आद्यां सदानवां घोरां महातेजां करालिकां ॥
प्रेतवाहां षोडशीं दशमीं रमिरुद्रां सरस्वतीं ॥ १५ ॥
एतानि नाम माख्याने ये पठन्ति दिने दिने ॥
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं मयेरिते ॥ १६ ॥
कालीं कालहरां देवीं कङ्कणं बीजरूपिणीं ॥
कालरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं वौल्लप्रियां देवीं स्वयम्भूकुसुमे रताम्॥
रोलाप्रियां महादेवीं कालिकां प्रणमाम्यहम्॥१८॥
द्वितीयप्रियां महाकूलां कुलीयोगे वरेण्यराम्॥
द्वितीयोगो ह्यवरतां कुलेश्वरां नमाम्यहम्॥१९॥
क्रौं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु॥
सर्वरोगा विनश्यन्ति नात्र कार्य्या विचारणा॥२०॥
क्रौं स्वाहान्तैर्महामन्त्रै स्वन्दर्भं साधयेत्ततः॥
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्योगो वश्यो भवेत्सदा॥२१॥
क्रौं ह्रूँ ह्रौं मन्त्रपूतेन चादातं सप्तभेः प्रिये॥
महाभयविनाशश्च जायते नात्र संशयः॥२२॥

ॐ ह्रीं ह्रूं स्वाहा मन्त्रेण श्मशानाग्निं च मन्त्रयेत्॥
शत्रोर्गृहे प्रतिदीप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति॥२४॥
ईं ह्रीं क्रीं वैव उच्चाटे पुष्पं ध्यं मोच्यसप्तधा॥
रिपूणां वैव चोच्चाटे नमस्येव नमः शिवः॥२५॥
आकर्षणे च क्रौं क्रीं क्रौं जम्बादातं प्रदेयेत्॥
सहस्र योजनस्था च शीघ्रं भगच्छति प्रेषये॥ २६॥
क्रौं क्रौं क्रौं ह्रूं ह्रूं ह्रीं ह्रीं वं जंजलं शोधितंहनया॥
तिलवेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत्॥२७॥
हृदये परमे ज्ञाने सर्व पापहरे परम्॥
अथाश्वं मेधादे दानानां कोटि कोटि गुणोत्तम॥२८॥

अन्या देवादि देवानां कोटि कोटि गुणं फलम्॥
देवी या गाद्धे या आनां कोटि कोटि फलं स्मृतम्॥२७॥
गङ्गादि सर्व तीर्थानां फलं कोटि गुणं स्मृतम्॥
स्वधा पाठ मात्रेण सर्वं सत्यं न संशयः॥२८॥
यो मारिं स्वेष्ट रूपेण ध्यानं कृत्वा ये धानतः॥
पठेत् स्तोत्रं महेशानि! सोपबन्धु कुलः सुखी॥२९॥
अरण्ये वा भयं दुष्टा पठेदग्रे मानसः॥
तस्य ते परमे स्थाने देवी लोके गमिष्यति॥३०॥
महादुःखे महा रोगे महा संकट कोदने॥
महा भये महा चोरे पठेत् स्तोत्रं महोत्तमम्॥३१॥
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥

श्री
गणेशाय नमः।

॥ महाकाल उवाच ॥

महा नील वर्णां शव हृत्कर्णां मपर्णां विवर्णेरिव व्याप्त युक्ताम्।
बालद्व्याल मालां कलच्चन्द्र भालां भजेऽहं शिवां कालरात्रीं
महाकाल संसर्गिणीं मङ्गलाढ्यां महा मंगलां पिङ्गलोल बालाम्।
शिवाभिः शवैर्देव देव स्वरूपां सदा सौम्य वर्णां चतुर्दिक्समन्तात्
शिवाभिः करैः कांचिकां सन्दधानां जनानां भयं नाशयंतं घोर रावाम्॥
सदा कुर्वतीं पार्वतीं भीम रावां महामुण्ड मालावलीकण्ठ तालम्।
अभीतिं वरं हस्त पद्मैर्दधानां महारौद्र शोरः पीनत्वशोभाढ्य वक्षाम्॥
सदा भक्त सौख्य प्रदां चित्र वस्त्रां महेशीं महेशादि संपूजितां तां नमामि नित्यम्।
यया सृज्यते पाल्यते विश्व मेतत्पुनर्भक्षयेत्यो ह्यरूपं दधत्या॥
यया मोहितं ब्रह्म विष्णवीशदेवाः पुरा सेवया तां शिवेशीं नमामि॥

महेशोऽपि यां कामना शैवेधाय स्वके वामभागे महामोहयुक्तां
समार्चेजपं ध्यानमेतन्मनस्कारमन्त्येव दोषान् विधेहि।
वदन्यत्र यं योगिनीं योगसंघाः परां शाक्तमन्ये जना भक्तां
महानीलवाणी मनस्यानीं च सन्तः श्रिया श्रीलतां यां भजन्ते॥१॥ महाभद्रकाली कराली विचित्रे वरे कालिकां कौलिकाः कोविदाः
सुवर्णां सतीं शांभवीं शास्त्रमुद्रां मनोज्ञे वयोभिः श्रिरोभिर्नमामि॥२॥
इमं मः स्तवं सज्जनो दादरोणाः पठेद्यतो ध्यानलग्नैकचित्तः॥
सधर्मार्थकामो क्षमा मोक्षभाग्यः प्रसादात्तमेवान्मोक्षं च कु-
र्यादिशम्॥ इति श्रीदादरोणाख्यः खण्डप्रपातस्तोत्रं संपूर्णम्॥
(महाकालसंहितायां)